॥ हिंदी दोहे संग्रह ॥

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय ।
टुटे से फिर ना जुड़े जुड़े गाँठ पड़ जाय ॥

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जात से सिल पर परत निशान ॥

रहिमन वे नर मर गए जो कहुँ मांगन जाए ।
उनते पहले वे मुए जिन मुख निकसत नाहिं ॥

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रूंधे मोय ।
इक दिन ऐसा होयगा मैं रूंधूंगी तोय ॥

पत्ता टूटा डाल से ले गयी पवन उड़ाय ।
अब के बिछुड़े कब मिलें दूर पड़ेंगे जाय ॥

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय ।
औरन को सीतल करे आपहुं सीतल होय ॥

निर्बल को न सताइये जाकी मोटी हाय ।
मुये काल की स्वास सों लोक भस्म हुइ जाय ॥

काल करे सो आज कर आज करे सो अब ।
पल में परलय होयगी बहुरि करोगे कब ॥

सब धरती कागद करुँ लेखनी सब बन राय ।
सात समुद्रकी मरू करुँ गुरु गुन लिखा न जाय ॥

दुर्लभ मानुष जन्म है देह न बारंबार ।
तरुवर ज्यों पत्ती झड़े, बहुरि न लागे डार ॥

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर ।
मनका मनका छाँड के, मन का मनका फेर ॥

मंगल भवन अमंगल हारी ।
द्रबहु सुदसरथ अचर बिहारी ॥

होइहै वही जो राम रचि राखा ।
को करे तरफ़ बढ़ाए साखा ॥

धीरज धरम मित्र अरु नारी ।
आपद काल परखिये चारी ॥

जेहिके जेहि पर सत्य सनेहू ।
सो तेहि मिलय न कछु सन्देहू ॥

जाकी रही भावना जैसी ।
प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ॥

रघुकुल रीत सदा चली आई ।
प्राण जाए पर वचन न जाई ॥

हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता ।
कहहि सुनहि बहुविधि सब संता ॥

मन जाहि राचो मिलहि सो वर सहजसुन्दर सांवरो ।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥

एहि भांति गौरि अशीस सुनि
सिय सहित हिय हरषित अली ।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि
मुदित मन मन्दिर चली ॥

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरष न जात कहि ।
मञ्जुल मङ्गल मूल वाम अङ्ग फरकन लगे ॥

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated February 17, 1999